मैं उड़ क्यों नहीं पाती?

रीटा

मैं उड़ क्यों नहीं पाती?

रीटा

“मैं दौड़ सकती हूँ,” मिन्नी बोली.

“मैं बहुत ऊँचा कूद सकती हूँ.”

"मैं झूल सकती हूँ.
मैं लटक सकती हूँ.
मैं पेड़ पर चढ़ कर
आकाश छू सकती हूँ.
लेकिन कृपया मुझे कोई तो बताये कि
मैं उड़ क्यों नहीं पाती?"

“हम्म्म! मुझे सोचने दो...
मुझे समझने दो....
हाँ, मैं जानता हूँ क्यों?

यह जूते जो तुम ने हैं पाँव पर पहने.
यह जूते उड़ नहीं सकते.

इन्हें उतार फेंको.
इन्हें उतार फेंको.
फिर पेड़ की सबसे ऊंची
डाल पर चढ़ जाओ.

उन जूतों के बिना
मुझे है विश्वास तुम उड़ पाओगी.
अलविदा."

नंगे पाँव तब मिन्नी चढ़ गई
पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर.

और वह बोली,
"मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ,
मैं...."

धड़ाम .....

“ओह, नहीं!

कितनी गड़बड़ है.

यह ठीक नहीं है.

सब गलत है.

हम अपने पाँव से नहीं उड़ते.

हम गाना गाने से उड़ते हैं.
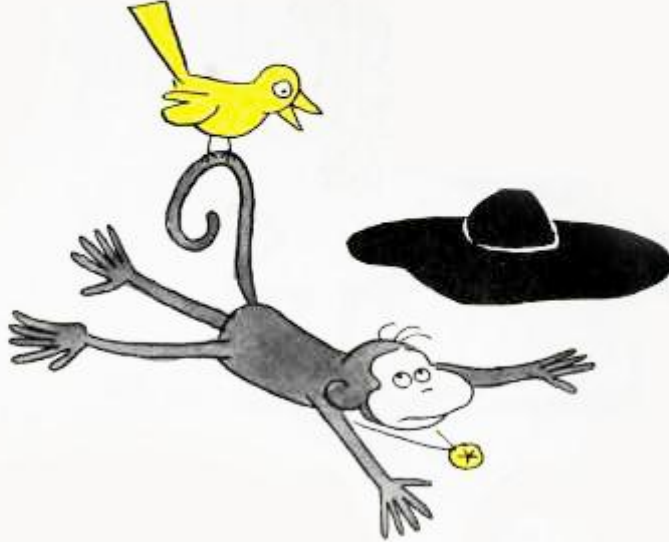
मैं हर समय गाती हूँ.

मैं धीमे स्वर में गाती हूँ.

मैं ऊंचे स्वर में गाती हूँ.

वापस जाओ और गाना गाओ.

क्योंकि गाना गाने से ही

तुम उड़ पाओगी. अलविदा.”

मिन्नी सबसे ऊंची डाल पर चढ़ बैठी.
और लगी वह ऊंचे स्वर में गाने.

“मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ,
मैं....”

धड़ाम.....

“नहीं, यह ठीक नहीं है.
क्या तुम देख नहीं सकती?
क्या तुम समझ नहीं सकती?
अगर तुम उड़ना चाहती हो तो,
मेरी तरह, तुम्हारे शरीर पर
लाल-काले धब्बे होने चाहिए.

चलो, मैं तुम पर लाल धब्बे बना दूँ.
चलो, मैं तुम पर काले धब्बे बना दूँ.
तुम्हारी पूंछ पर, तुम्हारे सर पर.
तुम्हारे कानों पर, तुम्हारी पीठ पर.

अब तुम्हारे ऊपर भी हैं धब्बे.
तुम आकाश में फुर्र से उड़ जाओगी.
घबराने की नहीं है कोई बात .
धब्बों के कारण तुम उड़ पाओगी.
अलविदा...."

अब मिन्नी के शरीर पर भी थे
लाल-काले धब्बे,
वह पेड़ के बहुत ऊपर चढ़ गई.

और वह बोली,
“मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ,
मैं....”

धड़ाम....

“ओह, नहीं, नहीं!
नहीं, नहीं, नहीं!
ऐसे नहीं उड़ सकते.
तुम्हारे पर होने चाहियें.
हाँ, उड़ने के लिये
सिर्फ पर चाहियें.

मैं तुम पर गोंद लगा देती हूँ.
फिर गोंद सूखने से पहले
तुम उन परों में लुढ़कना.
फिर तुम उड़ पाओगी.
अलविदा.”

मिन्नी परों में खूब लुढ़की.
फिर वह पेड़ के ऊपर चढ़ गई.

और वह बोली,
“मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ,
मैं....”

धड़ाम.....
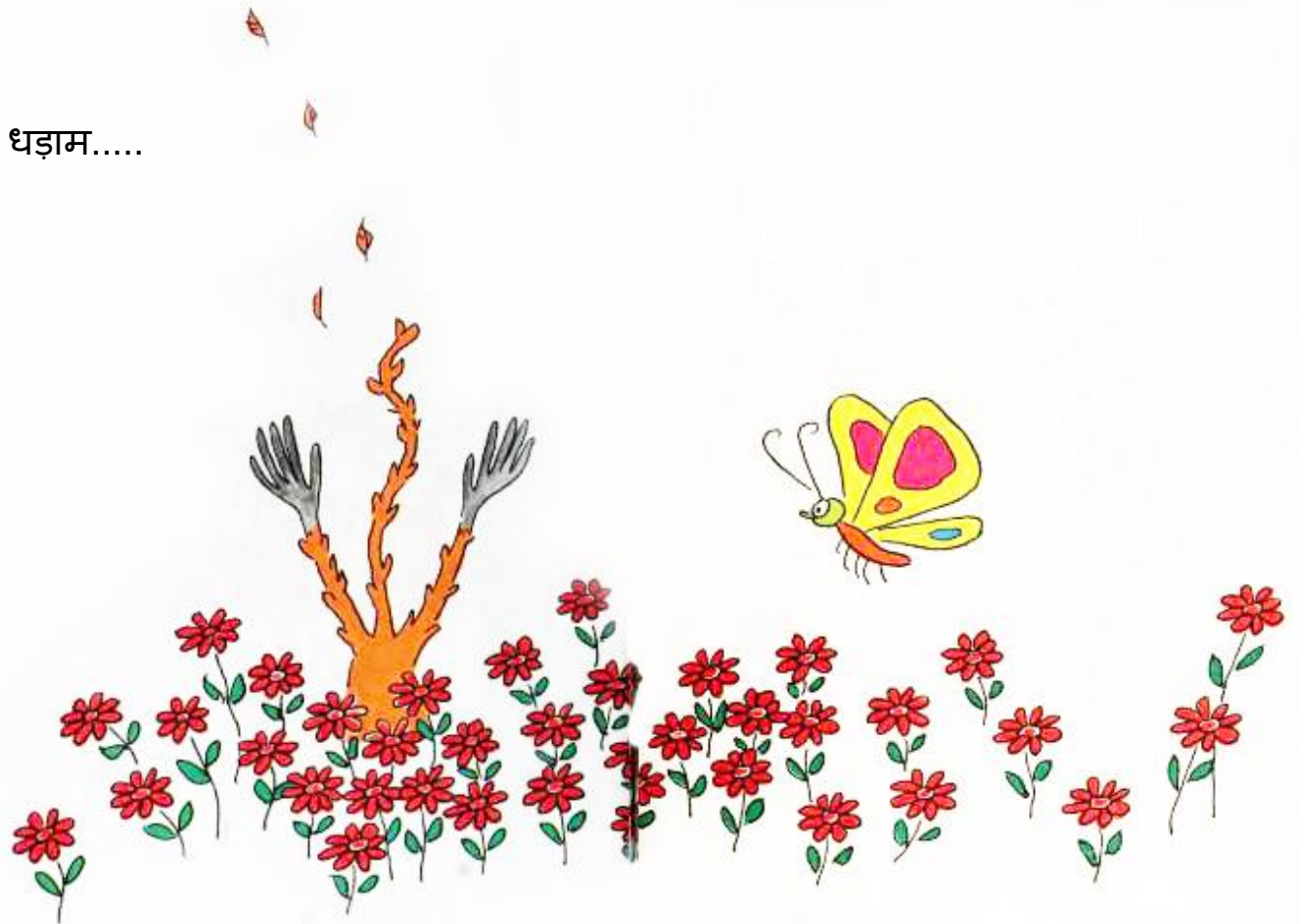
“तुम पाँव से नहीं उड़ सकती.
तुम गाने से नहीं उड़ सकती.
तुम परों से नहीं उड़ सकती.
ओह नहीं, वह सब गलत हैं.
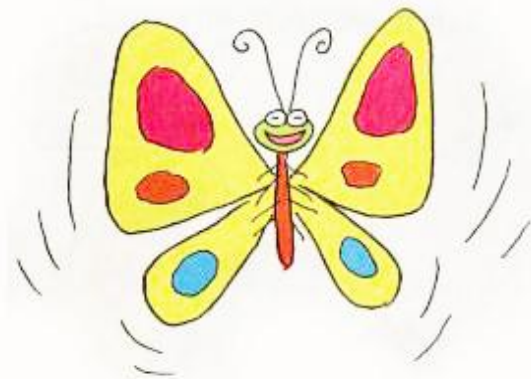
और उन काले और लाल धब्बों
से नहीं उड़ सकती!
अगर तुम्हें उड़ना है
तो तुम्हारे पास पंख होने चाहिए.

हम अभी कुछ पंख बनायेंगे.
हम कोशिश करें तो बना पायेंगे.

और जब तुम्हारे पंख होंगे,
तुम अवश्य उड़ पाओगी.
अलविदा."

उसने अपने पंख बाँध लिये
और फिर पेड़ पर ऊपर तक चढ़ गई.

और वह बोली,
“मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ,
मैं....”

धड़ाम....

“सब बेकार है.

मैं हार मानती हूँ.

मैं नहीं उड़ पाऊँगी .

मैं बस पेड़ों पर ही चढ़ पाऊँगी.”

“तुम उड़ पाओगी! आओ

उस पेड़ पर

एक बार फिर चढ़ जाओ.”
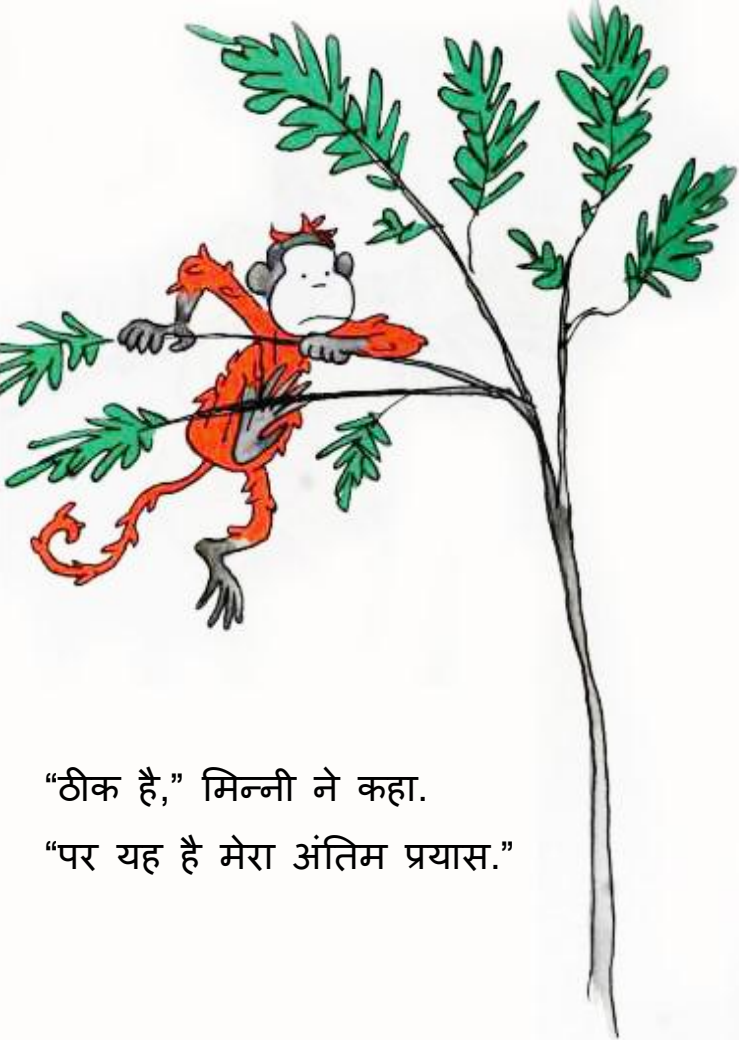
"ठीक है," मिन्नी ने कहा.
"पर यह है मेरा अंतिम प्रयास."

और उसने कहा,
"मैं उड़ सकती हूँ,
मैं उड़ सकती हूँ...."

“मैं...उड़... सकती... हूँ...”

"अलविदा!"

समाप्त